अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : तृतीय – जैन धर्म प्रथमा (परीक्षा 17 जुलाई, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) ज्ञान के अतिचार होते हैं-
(क) 14 (ख) 15
(ग) 12 (घ) 32 (क)

(b) जिस गुणस्थान में पहुँचने का बाद जीव वापस नीचे के गुणस्थानों में नहीं आता-
(क) सातवें (ख) दसवें
(ग) बारहवें (घ) ग्यारहवें (ग)

(c) साध्वियों में कौनसा शरीर नहीं पाया जाता है-
(क) वैक्रिय (ख) आहारक
(ग) तैजस (घ) कार्मण (ख)

(d) कर्मों की विशेष निर्जरा हेतु धारण किया जाने वाला चारित्र है-
(क) सामायिक (ख) सूक्ष्म सम्पराय
(ग) यथाख्यात (घ) परिहार विशुद्धि (घ)

(e) ''सूत्र का शुद्ध एवं सही अर्थ करना'' कहलाता है -
(क) विनयाचार (ख) अर्थाचार
(ग) व्यंजनाचार (घ) बहुमानाचार (ख)

(f) समकित धर्म रूपी प्रासाद की है-
(क) पेटी (ख) दरवाजा
(ग) दुकान (घ) नींव (घ)

(g) ''शब्द करके चेताया हो'' कौनसे व्रत का अतिचार है -
(क) दसवाँ (ख) नवमा
(ग) ग्यारहवाँ (घ) बारहवाँ (क)

(h) इन्द्रियों के आधार पर बनाये हुए जीवों के समूह को कहते हैं-
(क) जाति (ख) काय
(ग) इन्द्रिय (घ) शरीर (क)

(i) 13वाँ पापस्थान है-
(क) कलह (ख) पैशुन्य
(ग) अभ्याख्यान (घ) परपरिवाद (ग)

(j) ''पुष्पदन्त'' कौनसे तीर्थंकर का अपर (दूसरा) नाम है-
(क) चन्द्रप्रभजी (ख) शीतलनाथजी
(ग) पद्मप्रभजी (घ) सुविधिनाथजी (घ)

(k) भगवान ऋषभदेव के कौनसे दो कल्याणक एक ही तिथि को आते हैं-
(क) च्यवन और जन्म (ख) जन्म और दीक्षा
(ग) दीक्षा और केवल ज्ञान (घ) जन्म और निर्वाण (ख)

(l) जिन प्रवृतियों से श्रद्धा में अधिक विशिष्टता आती है, उसे कहते हैं-
(क) भूषण (ख) श्रद्धान
(ग) शुद्धि (घ) यतना (क)

(m) देवता के कितने दण्डक हैं -
(क) 19 (ख) 10
(ग) 13 (घ) 14 (ग)

(n) समकित के कितने अतिचार हैं-
(क) 14 (ख) 19
(ग) 60 (घ) 05 (घ)

(o) ''पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच प्रकार'' कौनसी भावना की पंक्ति है-
(क) निर्जरा (ख) संवर
(ग) धर्म (घ) लोक (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(a)	अनंग क्रीड़ा की हो, तीसरे व्रत का अतिचार है।	(नहीं)
(b)	सातवें व्रत के 20 अतिचार हैं।	(हाँ)
(c)	परिहार विशुद्धि चारित्र की आराधना कम से कम 18 वर्ष में पूर्ण होती है।	(नहीं)
(d)	मोक्ष की तीव्र इच्छा 'संवेग' है।	(हाँ)
(e)	'अरिहन्त देव का क्या कहना' प्रार्थना के रचयिता श्री गौतम मुनिजी म.सा. है।	(हाँ)
(f)	प्रतिक्रमण का मूल नाम आवश्यक सूत्र है।	(हाँ)
(g)	मत्थएण वंदामि बोलकर वन्दना करना मध्यम वन्दना है।	(नहीं)
(h)	सामायिक एक प्रकार का आध्यात्मिक व्यायाम है।	(हाँ)
(i)	जिन कारणों से आत्मा पर कर्म पुद्गलों का आगमन होता है, उसे संवर तत्त्व कहते हैं।	(नहीं)
(j)	भगवान ऋषभदेव के प्रथम गणधर ऋषभसेन हुए।	(हाँ)
(k)	महाघोष वाणव्यन्तर देव का एक प्रकार है।	(नहीं)
(l)	आगम तीन प्रकार के कहे गये हैं।	(हाँ)
(m)	प्रदूषण में पुद्गलास्तिकाय की विशेष भूमिका होती है।	(नहीं)
(n)	उपाध्याय सकल संघ के रखवार होते हैं।	(नहीं)
(o)	14वें गुणस्थान से जीव मुक्त होकर, एक समय की विग्रह गति से मोक्ष में चला जाता है।	(नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1=(15)**

(a)	पर्याप्ति	(क) व्यवहार मन	इन्द्रिय
(b)	इच्छामि खमासमणो	(ख) दान	तित्तिसन्नयराए
(c)	आत्मा	(ग) पद्म	वीर्य
(d)	वीर्याचार	(घ) कलह	बल नहीं छुपाना
(e)	आगमे तिविहे	(च) संज्वलन लोभ	घोसहीणं
(f)	योग	(छ) रोष	व्यवहार मन
(g)	ऋषभदेव	(ज) उपयोग	ईश्वर
(h)	अठारह पापस्थान	(झ) वितिगिच्छा	कलह
(i)	लेश्या	(य) इन्द्रिय	पद्म
(j)	दर्शनाचार	(र) ईश्वर	स्थिरीकरण
(k)	मन का दोष	(ल) बल नहीं छुपाना	रोष
(l)	यतना	(व) तित्तिसन्नयराए	दान
(m)	सूक्ष्म संपराय गुणस्थान	(क्ष) स्थिरीकरण	संज्वलन लोभ
(n)	दर्शन सम्यक्त्व	(त्र) घोसहीणं	वितिगिच्छा
(o)	जीवास्तिकाय का गुण	(ज्ञ) वीर्य	उपयोग

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1=(15)**

(a) ''शब्द करके चेताया हो'' मेरा अतिचार है। 10वाँ देसावगासिक व्रत

(b) मेरे कारण जीव को ऊँच और नीच कुल में जन्म लेना पड़ता है। गोत्र कर्म

(c) मेरी कोई निश्चित काल मर्यादा नहीं है। कायोत्सर्ग

(d) मेरे द्वारा इन्द्रियों को वश में किया जाता है। प्रतिसंलीनता

(e) मुझे मेरे पिता ऋषभदेव ने गणित विद्या का ज्ञान दिया। सुंदरी

(f) मैं प्रत्यक्ष हेतु दृष्टान्त पूर्वक अन्य मतियों से वाद करके धर्म को दीपाने में चतुर होता हूँ। वादी प्रभावक

(g) मुझे विकल्प रचना कहते हैं। भंग

(h) मैं पाप शल्य को निकालने का एक अमोघ साधन हूँ। प्रतिक्रमण

(i) मैं अप्रदेशी द्रव्य हूँ। काल द्रव्य

(j) मैं ज्ञानदर्शन आदि पर्यायों में निरन्तर रमण करती हूँ। आत्मा

(k) मेरे द्वारा उत्कृष्ट वंदना की जाती है। इच्छामी खमासमणो

(l) मैं दिन-रात ऑक्सीजन देता हूँ। पीपल का पेड़

(m) मैं कर्म शत्रुओं का विजेता हूँ। अरिहंत

(n) 'हम' सभी संसारी जीवों में पाये जाने वाले शरीर हैं। तैजस और कार्मण

(o) मैं श्रावक-श्राविका के जानने योग्य हूँ, किन्तु आचरण करने योग्य नहीं। कर्मादान

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) संलेखना के अतिचार कौन-कौन से हैं ?

उ. 1. इहलोगासंसप्पओगे 2. परलोगासंसप्पओगे 3. जीवियासंसप्पओगे 4. मरणासंसप्पओगे 5. कामभोगासंसप्पओगे।

(b) सास्वादन गुणस्थान किसे कहते हैं ?

उ. उपशम समकित से गिरती हुई अवस्था को सास्वादन गुणस्थान कहते हैं।

(c) भूषण किसे कहते हैं ?

उ. जिन प्रवृत्तियों से श्रद्धा में अधिक विशिष्टता आती हो, उन्हें 'भूषण' कहते हैं।

(d) 99 अतिचार कौनसे हैं ?

उ. 14 ज्ञान के, 5 समकित के, 60 बारह व्रतों के, 15 कर्मादान के, 5 संलेखणा के।

(e) सिद्धों के सब..................नमस्कार। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. सिद्धों के सब कर्म खपे हैं, सारे कारज सिद्ध हुए हैं ।
ज्योति में ज्योति अपार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार ।।

(f) धन-जन..................ज्ञान। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. धन-जन कंचन राज सुख, सबहि सुलभ कर जान।
दुर्लभ है संसार में एक यथारथ ज्ञान।।

(g) तिक्खुत्तो के पाठ में आवर्तन तीन बार क्यों किये जाते हैं ?

उ. मन, वचन और काया से वन्दनीय की पर्युपासना करने के लिये तीन बार आवर्तन किये जाते हैं।

(h) भगवान ऋषभदेव ने पुरुष व स्त्री की कितनी-कितनी कलाएँ सिखाई ?

उ. भगवान ऋषभदेव ने पुरुष की 72 कलाएँ व स्त्री की 64 कलाएँ सिखाई।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(a) जैन धर्म में ऐसा क्या है जिससे आन्तरिक शुद्धि के साथ-साथ बाह्य पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त रख सकते हैं ?

उ. जैन धर्म में प्रतिपादित अहिंसा, अपरिग्रह, भोगोपभोग परिमाणव्रत, अनर्थदण्ड-विरमणव्रत आदि ऐसे व्रत हैं जो आन्तरिक शुद्धि के साथ बाह्य पर्यावरण को भी काफी अंशों तक प्रदूषण मुक्त रख सकते हैं।

(b) मोहनीय कर्म के कितने भेद हैं और उसके क्षय से किस गुण की प्राप्ति होती है ?

उ. 1. दर्शन मोहनीय और 2. चारित्र मोहनीय।

दर्शन मोहनीय के क्षय से क्षायिक समकित और चारित्र मोहनीय के क्षय से अनन्त सुख या वीतरागता प्रकट होती है।

(c) शुद्धि किसे कहते हैं ? यह कितने प्रकार की होती हैं ? नाम लिखिए।

उ. विकृत श्रद्धा के निराकरण के प्रयत्न को 'शुद्धि' कहते हैं।

यह तीन प्रकार की होती है-1.मन शुद्धि, 2.वचन शुद्धि, 3. काय शुद्धि।

(d) भगवान ऋषभदेव जैन धर्म की ही नहीं, विश्व की विभूति थे। कैसे ?

उ. भगवान ऋषभदेव जैन धर्म की ही नहीं, विश्व की विभूति थे। वैदिक धर्म ने भी उन्हें अपना अवतार माना। भगवान ऋषभदेव को श्रीमद् भागवत (5/4/14) में साक्षात् ईश्वर कहा है। ऋग्वेद, विष्णुपुराण, अग्निपुराण, भागवत पुराण आदि वैदिक साहित्य में भी उनका गुण-कीर्तन आदर के साथ किया जाता है।

(e) मनःपर्यव ज्ञान किसे कहते हैं ?

उ. सम्यग्दर्शन के साथ इन्द्रिय और मन की सहायता के बिना सीधे आत्मा से संज्ञी जीवों के मनोगत भावों को जानना मनःपर्यव ज्ञान है।

(f) जं किंचि मिच्छाए............................आसायणाए। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. जं किंचि मिच्छाए, मण-दुक्कडाए, वय-दुक्कडाए काय-दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोहाए सव्वकालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए

(g) इच्छामि णं............................काउस्सग्गं। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे देवसियं पडिक्कमणं ठाएमि देवसिय नाण दंसण चरित्ताचरित्त तव अइयार चिंतणत्थ करेमि काउस्सग्गं।

(h) कोई पूजे...........................क्या कहना। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. कोई पूजे देव सरागी को, कोई शीष नमाते भोगी को।

अरिहन्त देव ही देव मेरे देवाधिदेव का क्या कहना।।

कक्षा : तृतीय – जैन धर्म प्रथमा (परीक्षा 16 जुलाई, 2017)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) ''इच्छामि ठामि काउस्सग्गं'' पद का कायोत्सर्ग में उच्चारण किया जाता है -

(क) इच्छामि ठामि काउस्सग्गं (ख) इच्छामि ठामि आलोउं

(ग) इच्छामि आलोउं (घ) इच्छामि पडिक्कमिउं (ग)

(b) जिस कर्म के उदय से जीव गति, जाति आदि प्राप्त करता है, वह कर्म है -

(क) नाम कर्म (ख) गोत्र कर्म

(ग)वेदनीय कर्म (घ) अंतराय कर्म (क)

(c) मिथ्यादृष्टि से विशेष भाषण न करना कहलाता है -

(क) आलाप (ख) संलाप

(ग) पर-पाखण्डी प्रशंसा (घ) पर पाखण्डी संस्तव (ख)

(d) भगवान ऋषभदेव को प्रथम पारणा कराया -

(क) श्रेयांस ने (ख) शंख राजा ने

(ग) जिनदास सेठ ने (घ) भरत चक्रवर्ती ने (क)

(e) भगवान ऋषभदेव की कुल संताने थीं -

(क) 100 (ख) 98

(ग) 102 (घ) 99 (ग)

(f) अपने धर्म और साधर्मियों से प्रेम करना कहलाता है-

(क) उपबृंहा (ख) वात्सल्य

(ग) प्रभावना (घ) निर्विचिकित्सा (ख)

(g) आचार्य के प्रति हुई आशातना की क्षमायाचना करने का पाठ है-

(क) तिक्खुत्तो (ख) मत्थएण वंदामि

(ग) इच्छामि खमासमणो (घ) संलेखना (ग)

(h) जीवास्तिकाय का गुण है -

(क) उपयोग गुण (ख) वर्तन गुण

(ग) चलन गुण (घ) विध्वंसन गुण (क)

(I) ''करूँ नहीं-अनुमोदूँ नहीं मनसा'' यह भंग किस नम्बर का है -

(क) 25 वाँ (ख) 38 वाँ

(ग) 42 वाँ (घ) 36 वाँ (क)

(j) आत्म-शुद्धि का पाठ है -

(क) इच्छाकारेणं (ख) तस्स उत्तरी

(ग) लोगस्स (घ) करेमिभंते (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1=(10)

(a) जो कृषि और पशुपालन आदि में निपुण थे, वे वैश्य कहलाये। (हाँ)

(b) निर्जरा शरीर को शुद्ध करने की आध्यात्मिक क्रिया है। (नहीं)

(c) सूत्र के पाठ का शुद्ध उच्चारण करना व्यंजनाचार है। (हाँ)

(d) दुष्ट आचरण का चिंतन करना आर्त्तध्यान है। (नहीं)

(e) मोक्ष की तीव्र इच्छा करना निर्वेद है। (नहीं)

(f) चारित्र के 75 अतिचार होते हैं। (हाँ)

(g) ''अधिकरण जोड़ रखा हो'' दसवें व्रत का अतिचार है। (नहीं)

(h) ''नमंसामि'' बोलते हुए पंचांग झुकाकर वंदना करनी चाहिए। (हाँ)

(i) सामायिक एक प्रकार का आध्यात्मिक व्यायाम है। (हाँ)

(j) धर्मास्तिकाय लोकालोक व्यापी है। (नहीं)

प्र.3 मुझे पहचानो :- 10x1=(10)

(a) मेरे दस दण्डक हैं। भवनपति

(b) मेरा दूसरा नाम पुष्पदंत भी है। सुविधिनाथ

(c) मैं प्रथम मंगल हूँ। नवकार मंत्र

(d) मैं जानने योग्य हूँ, परन्तु आचरण करने योग्य नहीं। कर्मादान

(e) मेरे द्वारा संज्ञी जीवों के मनोगत भावों को जाना जाता है। मनःपर्यव ज्ञान

(f) मै एक ऐसी आत्म विकास की सीढी हूँ, जिसे प्राप्त करने वाले ही तीर्थंकर बनकर चतुर्विध संघ की स्थापना करते हैं। सयोगी केवली गुणस्थान

(g) मेरा उदय न होना सम है। अनन्तानुबंधी कषाय

(h) मुझे मेरे पिता ने गणित विद्या का ज्ञान दिया। सुंदरी

(i) मुझसे जीव उच्च गोत्र कर्म बाँधता है। वंदना

(j) मैं एक ऐसा प्रदूषण हूँ, जिसके द्वारा सुनने की शक्ति निरंतर कम होती जाती है। ध्वनि-प्रदूषण

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। 14x2=(28)

(a) 24 दण्डकों में से तिर्यंच के कौन-कौन से दण्डक हैं ?

उ- 5 स्थावर के 5 दण्डक, 3 विकलेन्द्रिय के 3, तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय का 1, इस प्रकार कुल 9 दण्डक हैं।

(b) शुद्धि किसे कहते हैं व कितने प्रकार की होती हैं ?

उ- विकृत श्रद्धा के निराकरण के प्रयत्न को 'शुद्धि' कहते हैं।

शुद्धि के प्रकार- 1 मनशुद्धि 2 वचन शुद्धि 3 काय-शुद्धि।

(c) 11वें व्रत के प्रथम दो अतिचार लिखिए।

उ- 1 पौषध में शय्या संथारा न देखा हो या अच्छी तरह से न देखा हो।

2 प्रमार्जन न किया हो या अच्छी तरह से न किया हो।

(d) अंतिम पाँच कर्मादान के नाम लिखिए।

उ- 1 जंतपीलणकम्मे, 2 निलंछणकम्मे, 3 दवग्गिदावणया,

4 सर दह तलाय सोसणया एवं 5 असई जण पोसणया।

(e) उपयोग आत्मा किसे कहते हैं ?

उ- जब आत्मा में जानने और देखने की प्रवृति विशेष रूप से होती है, तब उस आत्मा को 'उपयोग आत्मा' कहा जाता है। यह आत्मा सिद्ध व संसारी सभी जीवों में पाई जाती है।

(f) ध्यान को परिभाषित कीजिए।

उ- मन, वचन और काय को किसी एक विषय पर एकाग्र करना अथवा केन्द्रित करना 'ध्यान' कहलाता है। अन्तर्मुहूर्त के लिए किसी एक विषय के बारे में एकाग्र होकर चिंता निरोध करना 'ध्यान' कहलाता है।

(g) भरत चक्रवर्ती, बाहुबली, ब्राह्मी व सुन्दरी की माताओं के नाम लिखिए।

उ- भरत चक्रवर्ती - सुमंगला बाहुबली- सुनन्दा

ब्राह्मी-सुमंगला सुन्दरी - सुनंदा

(h) प्रतिसंलीनता क्या है ?

उ- प्रतिसंलीनता-इन्द्रियों को वश में करना तथा कषाय और योगों को रोकना।

(i) मध्यम वंदना कब करनी चाहिए ?

उ- यह वंदना, सामायिक-प्रतिक्रमण आदि धार्मिक क्रिया की आज्ञा लेते समय, प्रश्नादि पूछते समय,

प्रवचन, आगम वाँचनी आदि श्रवण करने से पूर्व तथा पश्चात् करनी चाहिए।

(j) **जैन धर्म में ऐसे कौन-कौन से व्रत हैं जो पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त कर सकते हैं ?**

उ- अहिंसा, अपरिग्रह, भोगोपभोग, परिमाणव्रत, अनर्थदण्ड-विरमणव्रत आदि।

(k) **राजा राणा .... अपनी बार। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

उ- राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।

मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी बार।।

(l) **पूजा निंदा .... क्या कहना। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

उ- पूजा-निंदा में सम रहते, नित वीतरागता में रमते।

जहाँ समकित दीप जले नित ही, उनकी समता का क्या कहना।।

(m) **आचार्य .... नमस्कार। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

उ- आचार्य पंचाचार पलाते, संघ शिरोमणि संघ दिपाते।

सकल संघ रखवार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार।।

(n) **परमत्थ .... सद्दहणा। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

उ- परमत्थ संथवो वा, सुदिट्ठ परमत्थ सेवणा वावि।

वावण्ण कुदंसण वज्जणा, य सम्मत सद्दहणा।।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - **14x3 = (42)**

(a) **छट्ठे व्रत के अतिचार लिखिए।**

उ- 1 ऊँची, 2 नीची, 3 तिरछी दिशा का परिमाण अतिक्रमण किया हो, 4 क्षेत्र बढ़ाया हो, 5 क्षेत्र का परिमाण भूल जाने से, पथ संदेह पड़ने पर आगे चला हो, इन अतिचारों में से मुझे कोई दिवस संबन्धी अतिचार लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

(b) **श्वासोच्छ्वास बल प्राण किसे कहते हैं ?**

उ- श्वासोच्छ्वास वर्गणा के पुद्गलों की सहयता से श्वास लेने और बाहर निकालने की शक्ति विशेष को 'श्वासोच्छ्वास' बल प्राण कहते हैं।

(c) **अमूढ़ दृष्टि, उपबृंहा व उपधानाचार का अर्थ लिखिए।**

उ- अमूढ़दृष्टि- पाखण्डियों (मिथ्यामत) का आडम्बर देख कर उससे माहित नहीं होना।

उपबृंहा- गुणी पुरुषों को देखकर उनके गुणों की प्रशंसा करना तथा स्वयं भी उन गुणों को प्राप्त करने का प्रयत्न करना।

उपधानाचार- ज्ञान सीखते हुए यथाशक्ति तप करना।

(d) **वीर्याचार को परिभाषित कीजिए।**

उ- निरन्तर ज्ञान में, ध्यान में, तप में, संयम में और सदुपदेश आदि धर्मवद्धि- आत्मशुद्धि के प्रत्येक कार्य में उद्यत रहकर अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य को इन्हीं कार्यों में लगाये रखना वीर्याचार है।

(e) **''पर्यावरण प्रदूषण में जीवास्तिकाय की भूमिका विशेष है'' कैसे ?**

उ- प्रदूषण जीवास्तिकाय एवं पुद्गलास्तिकाय के द्वारा ही होता है, इनमें भी जीवास्तिकाय की भूमिका विशेष है। वह पुद्गल के प्राकृतिक वातावरण को भी दूषित करने में नहीं चूकता। जीवास्तिकाय में भी मनुष्य ही एक ऐसा प्राणि है जो पर्यावरण को प्रदूषित करने में अग्रणी है। वह चेतन और अचेतन दोनों प्रकार के पर्यावरण को प्रदूषित करता है।

(f) **भावना को परिभाषित कर भेदों के नाम लिखिए।**

उ- विविध विचारों से समकित में दृढ़ होना 'भावना' है।

1 समकित, धर्म रूपी वृक्ष का मूल है।

2 समकित, धर्म रूपी नगरी का दरवाजा है।

3 समकित, धर्म रूपी प्रासाद की नीव है।

4 समकित, धर्म रूपी आभूषणों की पेटी है।

5 समकित, धर्म रूपी वस्तुओं की दुकान है।

6 समकित, धर्म रूपी भोजन का थाल है।

(g) **भगवान ऋषभदेव के पंचकल्याणक कब-कब हुए ?**

उ- च्यवन कल्याणक - आषाढ़ कृष्णा चतुर्थी।

जन्म कल्याणक - चैत्र कृष्णा अष्टमी।

दीक्षा कल्याणक - चैत्र कृष्णा अष्टमी।

केवलज्ञान कल्याणक - फाल्गुन कृष्णा एकादशी।

निर्वाण कल्याणक - माघ कृष्णा त्रयोदशी।

(h) **वादी प्रभावक व विद्यावान प्रभावक को समझाइए।**

उ- वादी प्रभावक- प्रत्यक्ष हेतु दृष्टांत पूर्वक अन्यमतियों से वाद करके धर्म को दीपाने में चतुर होवें।

विद्यावान प्रभावक- अनेक विद्याओं का जानकार होकर धर्म की उन्नति करें-चमकावें।

(i) **परिहार विशुद्धि चारित्र की साधना किस प्रकार होती है ? संक्षिप्त में लिखिए।**

उ- कर्मों का विशेष रूप से त्याग करने, अलग हटाने तथा आत्मा को शुद्ध बनाने हेतु नौ मुनि जिस चारित्र की एक साथ आराधना करते हैं। उसे परिहारविशुद्धि चारित्र कहते हैं। इनमें कम से कम 18 माह का समय लगता है। इस चारित्र की आराधना के लिए जघन्य कुछ कम दस पूर्व तथा उत्कृष्ट परिपूर्ण दस पूर्व का ज्ञान होना आवश्यक है।

(j) **निवृत्ति बादर गुणस्थान को समझाइए।**

उ- निवृत्ति का अर्थ है- भिन्नता और बादर का अर्थ है- स्थूल कषाय। इस गुणस्थान में समान समय वाले जीवों के परिणामों में अंतर होता है, तथा बादर कषाय विद्यमान रहती है, इसलिये इसे 'निवृत्ति बादर गुणस्थान' कहते हैं।

(k) **ज्ञान दीप .... निर्जरा सार। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

उ- ज्ञान दीप तप तेल भर, घर शोधे भ्रम छोर।

या विधि बिन निकसे नहीं, पैठे पूरब चोर।।

पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच प्रकार।

प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार।।

(l) **नील लेश्या को परिभाषित कीजिए।**

उ- जो जीव हिंसा, झूँठ, चोरी आदि पाप प्रवृत्तियों में लगे रहते हैं। बहुत समझाने पर उन प्रवृत्तियों में थोड़ी कमी ला पाते हैं। जो धार्मिक भावना से कोसों दूर रहते हैं, ऐसे जीवों के परिणाम 'नील लेश्या' वाले होते हैं।

(m) **हीणक्खरं............ न सज्झायं। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

उ- हीणक्खरं, अच्चक्खरं, पयहीणं, विणयहीणं, जोगहीणं, घोसहीणं, सुट्ठुदिण्णं, दुट्ठुपडिच्छियं, अकाले कओ सज्झाओ, काले न कओ सज्झाओ, असज्झाइए सज्झायं, सज्झाइए न सज्झायं।

(n) **''वायु प्रदूषण को कम करने में पेड़-पौधों की महत्ती भूमिका है।'' समझाइए।**

उ- पीपल का पेड़ दिन-रात आक्सीजन देता है। वह कार्बनडाईऑक्साइड को ग्रहण करता है। तुलसी के पौधों की पर्यावरण शुद्धि में विशेष भूमिका रही है अतएव इन पौधों की सुरक्षा कर पर्यावरण शुद्धि में हम अपनी महती भूमिका निभा सकते हैं।

कक्षा : तृतीय – जैन धर्म प्रथमा (परीक्षा 29 जुलाई, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) प्रतिक्रमण का मूल उद्देश्य है -
(क) ज्ञान के अतिचारों की शुद्धि (ख) दर्शन के अतिचारों की शुद्धि
(ग) चारित्राचारित्र व तप पर लगे अतिचारों पर शुद्धि (घ) उपर्युक्त सभी (घ)

(b) ''श्रावक-श्राविकाओं के लिये जानने योग्य है, किन्तु आचरणीय नहीं''-
(क) दान (ख) कर्मादान
(ग) प्रदान (घ) सम्मान (ख)

(c) 'अचित्त वस्तु सचित्त पर रखी हो' किस व्रत का अतिचार है -
(क) पौषध व्रत (ख) देशावगासिक व्रत
(ग) अतिथि संविभाग व्रत (घ) उपभोग परिभोग परिमाण व्रत (ग)

(d) दृश्य-अदृश्य रूप धारण करने की क्रिया वाला शरीर है -
(क) वैक्रिय शरीर (ख) औदारिक शरीर
(ग) कार्मण शरीर (घ) आहारक शरीर (क)

(e) दान की शक्ति को प्रभावित करने वाला कर्म है -
(क) गौत्र कर्म (ख) नाम कर्म
(ग) अंतराय कर्म (घ) मोहनीय कर्म (ग)

(f) 'सर्वज्ञ प्रणीत मत के सिवाय अन्य मत वालों के साथ सहवास, संलाप आदि रूप में परिचय करना कहलाता है-
(क) पर पाखण्डी प्रशंसा (ख) पर पाखण्डी संस्तव
(ग) वितिगिच्छा (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं (ख)

(g) ऋषभदेव ने अक्षर ज्ञान, व्याकरण छंद, न्याय, काव्य आदि का ज्ञान दिया-
(क) ब्राह्मी को (ख) सुन्दरी को
(ग) सुमंगला को (घ) उपर्युक्त सभी को (क)

(h) 'अरिहन्त देव का क्या कहना' प्रार्थना के रचयिता हैं -
(क) आचार्य हस्ती (ख) आचार्य हीरा
(ग) मुनि गौतम (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं (ग)

(i) 'धर्म से डिगते प्राणी को स्थिर करना' कहलाता है -
(क) प्रभावना (ख) स्थिरीकरण
(ग) वात्सल्य (घ) निर्विचिकित्सा (ख)

(j) 'दाम बिना निर्धन दु:खी, तृष्णावश धनवान' इस पंक्ति में कौनसी भावना बताई गई है -
(क) अशरण भावना (ख) एकत्व भावना
(ग) संसार भावना (घ) अनित्य भावना (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) धर्म के फल में संदेह करना वितिगिच्छा है। (हाँ)
(b) जिन्होंने कुशील सेवन का जीवन भर के लिए त्याग कर दिया है, उन्हें स्वदार संतोष परदार विवर्जन शब्द बोलने चाहिए। (नहीं)
(c) 'परिग्रह' पाप का भेद है। (हाँ)
(d) वैक्रिय तथा आहारक शरीर सभी संसारी जीवों में पाये जाते हैं। (नहीं)
(e) शास्त्र के अनुसार कविता रचकर धर्म की उन्नति करने वाला कवि प्रभावक होता है। (हाँ)
(f) उक्कलिया, मण्डलिया तेउकाय के जीवों का शरीर है। (नहीं)
(g) अपराधियों को दण्ड द्वारा शिक्षा देकर कुशल नागरिक बनाने वालों को

क्षत्रिय कहते हैं। (हाँ)

(h) भगवान ऋषभदेव का 'च्यवनकल्याणक' माघ कृष्णा त्रयोदशी को हुआ था। (नहीं)

(i) स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ एवं शुद्ध पर्यावरण आवश्यक है। (हाँ)

(j) 42 दोष टालकर निर्दोष भिक्षादि ग्रहण करना एषणा समिति है। (हाँ)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) भत्त-पाणी का विच्छेद किया हो, मेरा अतिचार है। पहला स्थूल/प्राणातिपात विरमण व्रत

(b) पाप-शल्य को निकालने का मैं एक अमोघ साधन हूँ। प्रतिक्रमण

(c) मुझ में पन्द्रह योग पाये जाते हैं। मनुष्य

(d) मैं मोक्ष की तीव्र इच्छा वाला लक्षण हूँ। संवेग

(e) मेरा विवाह सुमंगला के साथ हुआ था। ऋषभदेव

(f) भगवान ऋषभदेव को ईख का रस पिलाने के लिए मुझको जातिस्मरण ज्ञान हुआ। राजकुमार श्रेयांस

(g) मुझसे जीव नीच गोत्र का क्षय करता है। वन्दना

(h) मैं सुर-असुरों से पूजित हूँ। अरिहन्त

(i) मैं महाव्रत समिति गुप्ति का आराधक हूँ। साधु

(j) मैं एक ऐसा प्रदूषण हूँ, जिसके पीने से विविध बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं। जल प्रदूषण

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। **14x2 = (28)**

(a) नवमाँ सामायिक व्रत के अतिचार लिखिए।

उ. मन, वचन, काया के अशुभ योग प्रवर्ताय हो। सामायिक की स्मृति न रखी हो। समय पूर्ण हुए बिना सामायिक पाली हो।

(b) दूजे स्थूल के कोई दो अतिचार लिखिए।

उ. नोट- इनमें से कोई दो-

1. सहसाकार किसी के प्रति कूड़ा आल दिया हो।
2. एकान्त में गुप्त बातचीत करते हुए व्यक्तियों पर झूठा आरोप लगाया हो।
3. अपनी स्त्री का मर्म प्रकाशित किया हो।
4. मृषा उपदेश दिया हो।
5. कूड़ा-लेख लिखा हो।

(c) दर्शन समकित के कोई दो अतिचार लिखिए।

उ. नोट- इनमें से कोई दो-

1. श्री जिनवचन में शंका की हो। 2. परदर्शन की आकांक्षा की हो।
3. धर्म के फल में संदेह किया हो। 4. पर पाखण्डी की प्रशंसा की हो।
5. पर पाखण्डी का परिचय किया हो।

(d) आगम के प्रकार लिखिए।

उ. सुत्तागम, अत्थागम, तदुभयागम।

(e) इच्छामि णं भंते का पाठ लिखिए।

उ. इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे देवसियं पडिक्कमणं ठाएमि देवसिय नाण दंसण चरित्ताचरित्त तव अइयार चिंतणत्थ करेमि काउस्सग्गं।

(f) कृष्ण लेश्या को परिभाषित कीजिए।

उ. जिन जीवों के परिणाम अत्यन्त क्रूर व निर्दयी होते हैं, ऐसे जीवों के परिणाम कृष्ण लेश्या वाले कहलाते हैं।

(g) चक्षुदर्शन किसे कहते हैं ?

उ. चक्षु:इन्द्रिय की सहायता से जीवों को मति श्रुत के पूर्व जो सामान्य बोध होता है अथवा अनुभूति होती है, उसे चक्षु दर्शन कहते हैं।

(h) आगार किसे कहते हैं ?

उ. व्रत अंगीकार करते समय रखी जाने वाली छूट को आगार कहते हैं।

(i) आस्था लक्षण को परिभाषित कीजिए।

उ. जिनेन्द्र भगवान के फरमाये हुए सूक्ष्म, गूढ़, अतीन्द्रिय धमास्तिकाय आत्मा, परलोक आदि पर श्रद्धा रखना आस्था है।

(j) भावना किसे कहते हैं ?

विविध विचारों से समकित में दृढ़ होना भावना है।

(k) कोई पूजे देव सरागी को .... क्या कहना।। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

कोई पूजे देव सरागी को, कोई शीष नमाते भोगी को।
अरिहन्त देव ही देव मेरे देवाधिदेव का क्या कहना।।

(l) भगवान ऋषभदेव की जीवनी से मिलने वाली दो शिक्षाएँ लिखिए।

उ. नोट- इनमें से कोई दो-

1. कर्त्तव्य पालन में दृढ़ता रखनी चाहिए।
2. विध्न बाधाओं को समता भाव से सहन करना चाहिए।
3. पुरुषों के समान स्त्री जाति को भी सम्मान देते हुए उन्हें आगे बढ़ाना चाहिए।
4. किसी भी कार्य में अन्तराय आने पर दूसरों को दोष नहीं देना चाहिए।

(m) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

उ. धन जन कंचन राजसुख, सबहि सुलभ कर जान।
दुर्लभ है संसार में एक यथारथ ज्ञान।।

(n) जघन्य वंदना कब करनी चाहिए ?

स्थानक में प्रवेश करने पर, साधु-साध्वी रास्ते में मिलने पर, गोचरी ला रहे हो तब मस्तक झुकाकर मत्थएण वंदामि बोलकर जघन्य वंदना करनी चाहिए।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - 14x3 = (42)

(a) ज्ञान के अतिचारों के नाम लिखिए।

उ. वाइद्धं, वच्चामेलियं, हीणक्खरं, अच्चक्खरं, पयहीणं, विणयहीणं, जोगहीणं, घोसहीणं, सुट्ठुदिण्णं, दुट्ठुपडिच्छियं, अकाले कओ सज्जाओ, काले न कओ सज्झाओ, असज्झाइए सज्झायं, सज्झाइए न सज्झायं।

(b) सातवें व्रत के अतिचारों को लिखिए।

उ. 1. पच्चक्खाण उपरान्त सचित्त का आहार किया हो।
2. सचित्त पडिबद्ध का आहार किया हो।
3. अपक्व का आहार किया हो।
4. दुपक्व का आहार किया हो।
5. तुच्छोषधि का आहार किया हो।

(c) संलेखना (तप) के पाँच अतिचार लिखिए।

उ. 1. इहलोगासंसप्पओगे। 2. परलोगासंसप्पओगे। 3. जीवियासंसप्पओगे।
4. मरणासंसप्पओगे। 5. कामभोगासंसप्पओगे।

(d) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

उ. इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहु सुमेणं भे! दिवसो वइक्कंतो।।

(e) रसनेन्द्रिय बल प्राण किसे कहते हैं ?

उ. रसना के द्वारा खट्टा-मीठा आदि स्वाद को ग्रहण करने की शक्ति विशेष को रसनेन्द्रिय बल प्राण कहते हैं।

(f) अयोगी केवली गुणस्थान को समझाइए।

उ. इस गुणस्थान में मन, वचन, काय योग का पूर्णतया निरोध हो जाता है, इसलिए इसे अयोगी केवली गुणस्थान कहते हैं। यहाँ से जीव सभी कर्मों से मुक्त होकर एक समय की अविग्रह गति से मोक्ष में चला जाता है।

(g) शुद्धि को परिभाषित कर उसके भेदों को समझाइए।

उ. विकृत श्रद्धा के निराकरण के प्रयत्न को शुद्धि कहते हैं।

1. मन शुद्धि- मन से वीतराग देव का स्मरण गुणगान करना, अन्य देव का नहीं।
2. वचन शुद्धि- वाणी से वीतराग देव व सुगुरु का गुणगान करना, अन्य का नहीं।
3. काय शुद्धि- काया से वीतराग देव व सुगुरु को वंदना करना, अन्य को नहीं।

(h) विनय को परिभाषित कीजिए। विनय भक्ति के कोई तीन प्रकार लिखिए।

उ. श्रद्धा के कारण पैदा होने वाली हृदय की कोमल वृतियों को विनय कहते हैं।

नोट- इनमें से कोई तीन-

1. अरिहन्त भगवान की विनय भक्ति करना।
2. सिद्ध भगवान की विनय भक्ति करना।
3. आचार्य महाराज की विनय भक्ति करना।
4. उपाध्याय महाराज की विनय भक्ति करना।
5. स्थविर महाराज की विनय भक्ति करना।
6. कुल अर्थात् एक आचार्य के शिष्य समुदाय की विनय भक्ति करना।
7. गण अर्थात् अनेक आचार्यों के शिष्य समुदाय की विनय भक्ति करना।
8. चतुर्विध संघ की विनय भक्ति करना।
9. साधर्मी की विनय भक्ति करना।
10. क्रियावान की विनय भक्ति करना।

(i) नैमित्तिक प्रभावक, तपस्वी प्रभावक को समझाइए।

उ. नैमित्तिक प्रभावक- निमित्त ज्ञान से भूत,भविष्य और वर्तमान काल की बात जानने वाला होकर धर्म को चमकाए।

तपस्वी प्रभावक- कठिन तपस्या करके धर्म की उन्नति करने वाले होवें।

(j) राजाभियोग आगार को समझाइए।

उ. राजा की पराधीनता से यदि समकितधारी श्रावक को अनिच्छापूर्वक अन्य तीर्थिक तथा उसके माने हुए देवादि को वंदना-नमस्कार करना पड़े तो श्रावक सम्यक्त्व व्रत का अतिक्रमण नहीं करता।

(k) अक्षय तृतीया को तप त्याग के रूप में क्यों माना जाता है ?

उ. राजकुमार श्रेयांस को जाति स्मरण ज्ञान हुआ और ईख के रस के रूप में भगवान को उन्होंने आहार बहराया यह संसार त्यागी मुनियों को आहार लाभ का प्रथम दिन था- वैशाख शुक्ला तृतीया जिसे अक्षय तृतीया के रूप में आज तप त्याग के रूप में मनाया जाता है।

(l) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

उ. पाँच नमन सब पाप प्रणाशक, उत्तम मंगल विध्न विनाशक।
भव भव शांति अपार परमेष्ठी, करते है नमस्कार
हममें भी तुमसे गुण जागे, हम भी परमेष्ठी पद पावे
पारस हो भवपार परमेष्ठी, करते है नमस्कार।।

(m) निर्जरा भावना के दोहे लिखिए।

उ. ज्ञान दीप तप तेल भर, घर शोधे भ्रम छोर
या विधि बिन निकसे नही, पैठे पूरब चोर
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच प्रकार
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार।

(n) ईर्या समिति को समझाइए।

उ. कार्य उत्पन्न होने पर विवेक पूर्वक गमन करना तथा दूसरे जीवों को किसी प्रकार की हानि नहीं हो इस प्रकार उपयोग पूर्वक चलना ईर्या समिति है।

कक्षा : तृतीय – जैन धर्म प्रथमा (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) प्रतिक्रमण का मूल नाम है-
(क) सामायिक सूत्र (ख) चउवीसत्थव सूत्र
(ग) आवश्यक सूत्र (घ) कायोत्सर्ग सूत्र (ग)

(b) दर्शन समकित के अतिचार हैं-
(क) 5 (ख) 6
(ग) 8 (घ) 60 (क)

(c) पन्द्रह कर्मादानों का उल्लेख किस स्थूल में किया गया है-
(क) आठवाँ स्थूल (ख) दसवाँ स्थूल
(ग) सातवाँ स्थूल (घ) पाचवाँ स्थूल (ग)

(d) तेरहवें पापस्थान का नाम है-
(क) मिथ्यादर्शन शल्य (ख) कलह
(ग) राग (घ) अभ्याख्यान (घ)

(e) तेइन्द्रिय का उदाहरण है-
(क) लीख (ख) मच्छर
(ग) सीप (घ) पक्षी (क)

(f) पर्याप्ति का भेद नहीं है-
(क) आहार (ख) काय
(ग) शरीर (घ) भाषा (ख)

(g) चौदह पूर्वधारी प्रमत्त अणगार में पाया जाने वाला विशेष शरीर है-
(क) औदारिक (ख) वैक्रिय
(ग) आहारक (घ) तैजस (ग)

(h) भगवान ऋषभदेव को निर्वाण(मोक्ष) प्राप्त हुआ-
(क) वैशाख कृष्णा त्रयोदशी (ख) माघ कृष्णा त्रयोदशी
(ग) चैत्र कृष्णा त्रयोदशी (घ) माघ शुक्ला त्रयोदशी (ख)

(i) ''एक सौ आठ बार परमेष्ठी'' प्रार्थना के रचयिता हैं-
(क) गजेन्द्र मुनि (ख) पारस मुनि
(ग) गौतम मुनि (घ) शिव मुनि (ख)

(j) 'आभ्यन्तर तप' का भेद है-
(क) ऊनोदरी (ख) व्युत्सर्ग
(ग) कायक्लेश (घ) भिक्षाचर्या (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) संलेखना के पाँच अतिचार नहीं होते हैं। (नहीं)
(b) 'शब्द करके चेताया हो' आठवें स्थूल का अतिचार है। (नहीं)
(c) 'पाप शल्य' को निकालने वाला एक अमोघ साधन प्रतिक्रमण है। (हाँ)
(d) कर्मादान का 10वाँ भेद 'जंतपीलणकम्मे' है। (नहीं)
(e) मतिज्ञान, इन्द्रिय एवं मन की सहायता से होता है। (हाँ)
(f) वेदनीय कर्म के क्षय से अव्याबाध सुख प्रकट होता है। (हाँ)
(g) श्रद्धा के बीच होने वाले विक्षेपों को 'भूषण' कहते हैं। (नहीं)
(h) समकित, धर्म रूपी भोजन का थाल है। (हाँ)
(i) भगवान ऋषभदेव इस युग के प्रथम आदिपुरुष एवं शिक्षाशास्त्री थे। (हाँ)
(j) ब्राह्मण वर्ण की स्थापना भरत चक्रवती ने की थी। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	चौथा आवश्यक	(क) आगमे तिविहे का पाठ	बोनस अंक दिया जाय/वंदना
(b)	अनंग क्रीड़ा की हो	(ख) इच्छामि खमासमणो का पाठ	चतुर्थ स्थूल
(c)	निसीहि अहो कायं	(ग) मोक्ष	इच्छामि खमासमणो का पाठ
(d)	आगम के तीन प्रकार	(घ) चतुर्थ स्थूल	आगमे तिविहे का पाठ
(e)	सातवाँ बोल	(च) वैशाख शुक्ला तृतीया	शरीर पाँच
(f)	विभंगज्ञान	(छ) शरीर पाँच	अज्ञान का भेद
(g)	सम्पूर्ण कर्मो का क्षय होना	(ज) अज्ञान का भेद	मोक्ष
(h)	त्याग तप दिवस	(झ) वंदना	वैशाख शुक्ला तृतीया
(i)	विनीता	(य) तिक्खुत्तो का पाठ	भगवान ऋषभदेव
(j)	मध्यम वन्दना	(र) भगवान ऋषभदेव	तिक्खुत्तो का पाठ

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a)	मैं आवश्यक सूत्र का प्रथम पाठ हूँ।	इच्छामि णं भंते का पाठ
(b)	'मुखरी वचन बोला हो' मेरा अतिचार है।	आठवा स्थूल
(c)	मुझे समुच्चय का पाठ भी कहा जाता है।	99 अतिचारों का पाठ
(d)	मैं 17वाँ पापस्थान हूँ।	माया मृषावाद
(e)	मैं सुख-दु:ख, पाप-पुण्य का कर्त्ता एवं भोक्ता हूँ।	जीव तत्त्व
(f)	मैं एक ऐसा लक्षण हूँ, जिसमें दु:खी को देखकर दया से हृदय कोमल हो जाता है।	अनुकम्पा
(g)	मैं निमित्त ज्ञान से भूत, भविष्य एवं वर्तमान काल की बातें जानकर धर्म की प्रभावना करता हूँ।	नैमित्तिक प्रभावक
(h)	मैं बाहुबली की माता हूँ।	सुनंदा
(i)	मैं '' अरिहन्त देव का क्या कहना'' प्रार्थना का रचयिता हूँ।	गौतम मुनि जी म.सा.
(j)	मुझे आवश्यक होने पर निरवद्य वचन की प्रवृत्ति करना कहा जाता है।	भाषा समिति

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए: - **12x2 = (24)**

(a) 'करेमि भंते पाठ' का क्या प्रयोजन है ?

उ. 'करेमि भंते' पाठ से सभी पापों का त्याग कर सामायिक व्रत लेने की प्रतिज्ञा की जाती है। इसे सामायिक-प्रतिज्ञा सूत्र भी कहते हैं।

(b) संलेखना के दो अतिचार लिखिए।

उ. 1. इहलोगासंसप्पओगे, 2. परलोगासंसप्पओगे, 3. जीवियासंसप्पओगे, 4. मरणासंसप्पओगे, 5. कामभोगासंसप्पओगे । (नोट:- कोई दो)

(c) 'काय' किसे कहते हैं ?

उ. शरीर के आधार पर जीवों के बनाये हुये समुह 'काय' कहते हैं।

(d) सभी संसारी जीवों में पाये जाने वाले दो शरीरों के नाम लिखिए।

उ. तैजस और कार्मण शरीर

(e) सास्वादन गुणस्थान किसे कहते हैं ?

उ. उपशम सम्यक्त्व से गिरती हुई अवस्था को 'सास्वादन गुणस्थान' कहते हैं।

(f) रूपी पुद्गल के चार भेद लिखिए।

उ. 1. स्कन्ध 2. देश 3. प्रदेश 4. परमाणु पुद्गल

(g) यतना किसे कहते हैं ?

उ. सम्यक्त्व रूप अनमोल धन को मिथ्यात्व रूप चोरों से सुरक्षित रखने के प्रयत्न को यतना कहते हैं।

(h) भगवान ऋषभदेव का विवाह सर्वप्रथम किसके साथ हुआ ?

उ. सुमंगला व सुनन्दा के साथ

(i) भगवान ऋषभदेव ने कर्म के आधार पर कौनसे वर्णों की स्थापना की ?

उ. क्षत्रिय, वेश्य और शुद्र

(j) ''उपाध्याय............नमस्कार।'' उक्त प्रार्थना की कड़ी को पूर्ण कीजिए।

उ. उपाध्याय अध्ययन कराते, भ्रांति मिटाते ज्ञान बढ़ाते।
द्वादशांग आधार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार।।

(k) 'अनिह्नवाचार' का अर्थ लिखिए।

उ. ज्ञान पढ़ाने वाले गुरु का नाम नहीं छापना।

(l) कौनसी गैस प्राणियों के लिए अभिशाप है ?

उ. कार्बन-डॉइ-ऑक्साइड।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - 12x3=(36)

(a) पर्युपासना कितने प्रकार की होती हैं ? नाम लिखिए।

उ. पर्युपासना तीन प्रकार की होती है- 1. नम्र आसन से सुनने की इच्छा सहित वन्दनीय के सम्मुख हाथ जोड़कर बैठना, कायिक पर्युपासना है। 2. उनके उपदेश के वचनों का वाणी द्वारा सत्कार करते हुए समर्थन करना, वाचिक पर्युपासना है। 3. उपदेश के प्रति अनुराग रखते हुए एकाग्रचित्त रखना, मानसिक पर्युपासना हैं।

(b) छठे स्थूल के अतिचार लिखिए।

उ. छठ्ठा दिशिव्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं- 1. ऊँची, 2. नीची, 3. तिरछी दिशा का परिमाण अतिक्रमण किया हो, 4. क्षेत्र बढ़ाया हो, 5. क्षेत्र का परिमाण भूल जाने से, पंथ का संदेह पड़ने पर आगे चला हो।

(c) प्रतिक्रमण का मूल उद्देश्य क्या है ?

उ. ज्ञान, दर्शन, चारित्राचारित्र व तप पर लगे अतिचारों की शुद्धि करना ही प्रतिक्रमण का मूल उद्देश्य है।

(d) 99 अतिचारों का पाठ लिखिए।

उ. 14 ज्ञान के, 5 समकित (दर्शन) के, 60 बारह व्रतों के, 15 कर्मादान के, 5 संलेखणा (तप) के, इन 99 अतिचारों में से किसी भी अतिचार को जानते, अजानते, मन, वचन, काय से सेवन किया हो, कराया हो, करते हुए को भला जाना हो तो अनन्त सिद्ध केवली भगवान् की साक्षी से जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

(e) **''आवस्सियाए..................सव्वकालियाए।'' रिक्त स्थान की पूर्ति उपयुक्त शब्दों से कीजिए।**

उ. आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तिसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मण-दुक्कडाए, वय-दुक्कडाए ,काय-दुक्कडाए, कोहाए माणाए मायाए लोहाए सव्वकालियाए।

(f) **अंक 23 के भंग लिखिए।**

उ. करूँ नहीं, कराऊँ नहीं - मनसा, वयसा, कायसा।

करूँ नहीं, अनुमोदूँ नहीं - मनसा, वयसा, कायसा।

कराऊँ नहीं, अनुमोदूँ नहीं - मनसा, वयसा, कायसा।

(g) **चउरिन्द्रिय जीव में कौनसी इन्द्रिया होती हैं ? उदाहरण सहित लिखिए।**

उ. जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षु ये चारों इन्द्रियाँ हो, उन जीवों के समूह को 'चउरिन्द्रिय' जाति कहते हैं। जैसे- मक्खी, मच्छर, बिच्छू, टीड, पतंगे, भँवरा, कसारी आदि।

(h) **लेश्या किसे कहते हैं ? पद्म लेश्या को परिभाषित कीजिए।**

उ. जो शक्ति आने वाले कर्मों को आत्मा के साथ चिपका दे, उसे लेश्या कहते हैं।

पद्म लेश्या- पद्म लेश्या वाला अल्पक्रोधी, अल्पमानी, अल्पमायी, अल्पलोभी, प्रशान्तचित्त, आत्मदमी, जितेन्द्रिय एवं उपशांत होता है।

(i) **स्थानक के छः भेद लिखिए।**

उ. 1. जीव चेतना लक्षण युक्त है।

2. जीव शाश्वत अर्थात् उत्पत्ति और विनाश रहित है।

3. जीव शुभाशुभ कर्मो का कर्त्ता है।

4. जीव किये हुए कर्मो (सुख-दुःख) का स्वयं भोक्ता है।

5. भव्य जीव कर्मो को क्षय करके मोक्ष में जाता है।

6. सम्यग् ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप मोक्ष के उपाय हैं।

(j) **''पूजा................देवाधिदेव का क्या कहना।'' प्रार्थना की कड़ी को पूर्ण कीजिए।**

उ. पूजा-निन्दा में सम रहते, नित वीतरागता में रमते।

जहाँ समकित दीप जले नित ही, उनकी समता का क्या कहना।।

(k) **''पाँच नमन..................परमेष्ठि पद पावें।'' रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

उ. पाँच नमन सब पाप प्रणाशक, उत्तम मंगल विघ्नविनाशक।

भव-भव शांति अपार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार ।।

हममें भी तुमसे गुण जागें, हम भी परमेष्ठी पद पावें।

(l) **जैन धर्म के आधार पर पर्यावरण को प्रदूषण-मुक्त रखने के उपायों का उल्लेख कीजिए।**

उ. जैन धर्म में प्रतिपादित अहिंसा, अपरिग्रह, भोगोपभोग परिमाणव्रत, अनर्थदण्ड-विरमणव्रत आदि ऐसे व्रत हैं जो आन्तरिक शुद्धि के साथ बाह्य पर्यावरण को भी काफी अंशों तक प्रदूषण मुक्त रख सकते हैं। 1. जैन धर्म में पेड़-पौधों को काटने, लकड़ी बेचने, जंगल में आग लगाने जैसे धंधों का निषेध है, जो पर्यावरण के प्रति जैन धर्म जागरूकता को सूचित करते हैं। 2. वनस्पति में जीवन स्वीकार करने के कारण अकारण उसकी हिंसा करना जैन धर्म में मना है। 3. इसी प्रकार जल का उपयोग यथासम्भव सीमित रूप में किया जाना चाहिए। आज जल का संकट है। जल को बचाना भी पर्यावरण को बचाने में सहायक है। 4. जैन धर्म में जो 'यतना' का सिद्धान्त है वह बड़ा महत्त्वपूर्ण है। जिस किसी भी वस्तु का उपयोग करें, पूर्ण जागरूकता के साथ करें।